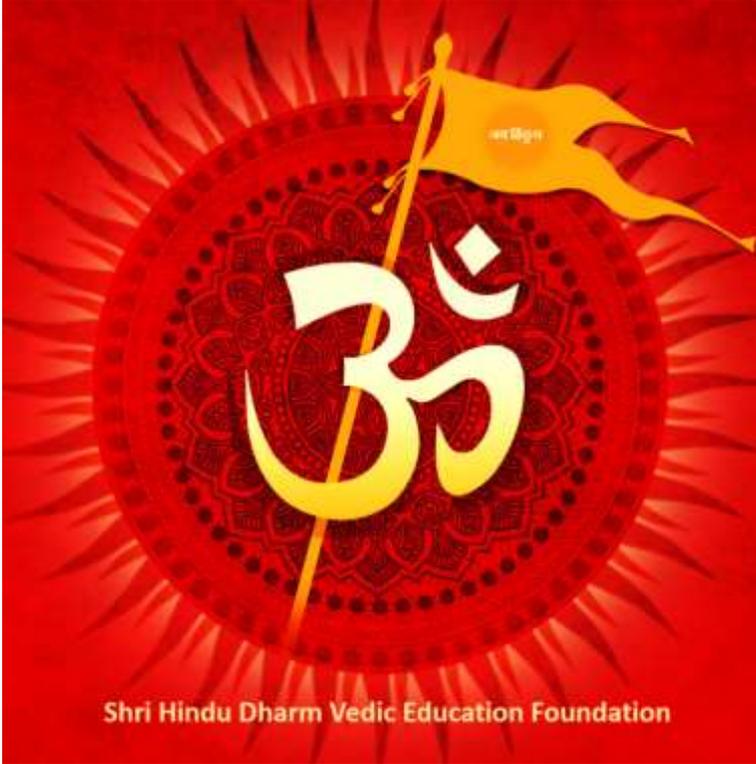




॥ ॐ ॥
॥ श्री परमात्मने नमः ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

तुरीयातीतोपनिषत्





विषय सूची

॥अथ तुरीयातीतोपनिषत्॥	3
तुरीयातीत उपनिषद	4
शान्तिपाठ	8



॥ श्री हरि ॥

॥ अथ तुरीयातीतोपनिषत् ॥

॥ हरिः ॐ ॥

ॐ तुरीयातीतोपनिषद्वेद्यं यत्परमाक्षरम् ।
तत्तुर्यातीतचिन्मात्रं स्वमात्रं चिन्तयेऽन्वहम् ॥

तुरीयातीतसंन्यासपरिव्राजाक्षमालिका ।
अव्यक्तैकाक्षरं पूर्णा सूर्याक्षयध्यात्मकुण्डिका ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

वह परब्रह्म पूर्ण है और वह जगत ब्रह्म भी पूर्ण है, पूर्णता से ही पूर्ण उत्पन्न होता है। यह कार्यात्मक पूर्ण कारणात्मक पूर्ण से ही उत्पन्न होता है। उस पूर्ण की पूर्णता को लेकर यह पूर्ण ही शेष रहता है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हमारे, अधिभौतिक, अधिदैविक तथा तथा आध्यात्मिक तापों (दुखों) की शांति हो।



॥ श्री हरि ॥

॥ तुरीयातीतोपनिषत् ॥

तुरीयातीत उपनिषद

॥ हरिः ॐ ॥

अथ तुरीयातीतावधूतानां कोऽयं मार्गस्तेषां का
स्थितिरिति पितामहो भगवन्तं पितरमादिनारायणं
परिसमेत्योवाच ।

तमाह भगवन्नारायणो योऽयमवधूतमार्गस्थो लोके
दुर्लभतरो नतु बाहुल्यो यद्येको भवति स एव नित्यपूतः स एव
वैराग्यमूर्तिः स एव ज्ञानाकारः स एव वेदपुरुष इति
ज्ञानिनो मन्यन्ते ।

महापुरुषो यस्तच्चित्तं मय्येवावतिष्ठते ।

अहं च तस्मिन्नेवावस्थितः सोऽयमादौ तावत्क्रमेण
कुटीचको बहूदकत्वं प्राप्य बहूदको हंसत्वमवलम्ब्य
हंसः परमहंसो भूत्वा स्वरूपानुसन्धानेन
सर्वप्रपञ्चं विदित्वा दण्डकमण्डलुकटिसूत्र-
कौपीनाच्छादनं स्वविध्युक्तक्रियादिकं सर्वमप्सु
संन्यस्य दिगम्बरो भूत्वा विवर्णजीर्णवल्कलाजिन-
परिग्रहमपि संत्यज्य तदूर्ध्वमन्त्रवदाचरन्क्षौरा-
भ्यङ्गस्नानोर्ध्वपुण्ड्रादिकं विहाय लौकिकवैदिकम-
प्युपसंहृत्य सर्वत्र पुण्यापुण्यवर्जितो ज्ञानाज्ञानमपि
विहाय शीतोष्णसुखदुःखमानावमानं निर्जित्य वासनात्रय-
पूर्वकं निन्दानिन्दागर्वमत्सरदम्भदपद्वेषकामक्रोधलोभ

मोहहर्षामर्षासूयात्मसंरक्षणादिकं दग्ध्वा स्ववपुः
 कुणपाकारमिव पश्यन्नयत्नेनानियमेन लाभालाभौ समौ
 कृत्वा गोवृत्त्या प्राणसन्धारणं कुर्वन्त्यत्प्राप्तं तेनैव
 निर्लोलुपः सर्वविद्यापाण्डित्यप्रपञ्चं भस्मीकृत्य स्वरूपं
 गोपयित्वा ज्येष्ठाज्येष्ठत्वानपलापकः सर्वोत्कृष्टत्व-
 सर्वात्मकत्वाद्वैतं कल्पयित्वा मत्तो व्यतिरिक्तः कश्चिन्ना-
 न्योऽस्तीति देवगुह्यादिधनमात्मन्युपसंहृत्य दुःखेन नोद्विग्नः
 सुखेन नानुमोदको रागे निःस्पृहः सर्वत्र शुभाशुभयो-
 रनभिस्नेहः सर्वेन्द्रियोपरमः स्वपूर्वापन्नाश्रमाचारविद्या-
 धर्मप्राभवमननुस्मरन्त्यक्तवर्णाश्रमाचारः सर्वदा
 दिवानक्तसमत्वेनास्वप्नः सर्वदासंचारशीलो
 देहमात्रवशिष्टो जलस्थलकमण्डलुः सर्वदानुन्मत्तो
 बालोन्मत्तपिशाचवदेकाकी संचरन्नसंभाषणपरः
 स्वरूपध्यानेन निरालम्बमवलम्ब्य स्वात्मनिष्ठानुकूलेन
 सर्वं विस्मृत्य तुरीयातीतावधूतवेषेणाद्वैतनिष्ठापरः
 प्रणवात्मकत्वेन देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः स
 कृतकृत्यो भवतीत्युपनिषत् ॥

समस्त लोकों के पितामह ब्रह्मा ने अपने पिता आदिनारायण के
 निकट जाकर उनसे पूछा-भगवन् तुरीयातीत अवधूत का मार्ग कौन
 सा है और उसकी कैसी स्थिति होती है? भगवान् नारायण ने उनसे
 कहा-अवधूत पथ पर चलने वाले इस लोक में दुर्लभ हैं, वे बहुत नहीं
 होते, यदि एकाध होता भी है, तो वह नित्य पवित्र, वैराग्य मूर्ति,
 ज्ञानाकार और वेद पुरुष होता है, ऐसा विद्वज्जन मानते हैं। ऐसा
 महापुरुष अपने चित्त को मुझ में अवस्थित रखता है और मैं उसी में
 स्थित होता हूँ। वह प्रारम्भ में कुटीचक होता है, तत्पश्चात् बहूदकत्व

प्राप्त करके हंसत्व का अवलम्बन लेता है। हंस होकर फिर परमहंस बनता है। वह निजस्वरूप के अनुसन्धान द्वारा समस्त प्रपञ्चों के रहस्य को जानकर, दण्ड, कमण्डलु, कटिसूत्र, कौपीन, आच्छादन वस्त्र और विधिपूर्वक की जाने वाली नित्य क्रियाओं को जल में विसर्जित कर देता है और दिगम्बर होकर जीर्ण वल्कल और अजिन (मृग) चर्म के भी परिग्रह को छोड़कर समस्त प्रकार का निषेध करके (अमन्त्रवत् होकर), क्षौर कर्म (केश-कर्तन-दाढ़ी बाल आदि बनवाने), अभ्यङ्ग स्नान (उबटन लगाकर स्नान करने) तथा ऊर्ध्व पुण्ड्र (मस्तक पर तिलक) लगाने को भी छोड़कर, वैदिक और लौकिक कर्मों का उपसंहार करके, सर्वत्र पुण्य और अपुण्य को भी त्याग कर ज्ञान और अज्ञान को भी छोड़ देता है। वह शीत-उष्ण (सर्दी-गर्मी), सुख-दुःख, मान-अपमान को भी जीत लेता है। वह शरीर की तीनों वासनाओं सहित निन्दा-अनिन्दा, गर्व, मत्सर, दम्भ, दर्प, इच्छा, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह, हर्ष, अमर्ष, असूया और आत्म संरक्षण आदि को (भावाग्नि में) जलाकर, अपनी काया को मुर्दे की तरह देखता हुआ, प्रयत्न और नियम के बिना लाभ और हानि को समान करके, गोवृत्ति से (गौ की तरह) जो कुछ मिल गया, उसी में सन्तोष करके प्राण धारण किए रहता है। वह सब प्रकार से लालचरहित होकर समस्त विद्याओं और पाण्डित्य को भस्मीभूत करके, अपने वास्तविक स्वरूप को छिपाते हुए, छोटे-बड़े के भाव को (बाह्य व्यवहार में) पूर्ववत् (अज्ञानी के समान) बनाये रखता है। सर्वोत्कृष्ट सर्वात्मक रूप अद्वैत की कल्पना करके उसका यह मानना होता है कि मेरे अतिरिक्त कुछ और नहीं है। वह देव रहस्य (गुह्य) आदि धन को अपने अन्दर समेट करके (अर्थात् देव रहस्यों को अपने में गोपनीय

करके) ने दुःख में उद्विग्न होता है और न सुख में प्रसन्न होता है। वह राग में स्पृहा नहीं रखता और न शुभ-अशुभ किसी बात से स्नेह रखता है। उसकी समस्त इन्द्रिय उपराम को प्राप्त हो जाती हैं। वह अपने पूर्व के आश्रम, विद्या, धर्म, प्रभाव का स्मरण नहीं करता और वर्णाश्रम आचार का परित्याग कर देता है। दिन और रात के प्रति समान भाव रखने के कारण वह कभी सोता नहीं (अर्थात् सदैव जाग्रत् रहकर सावधान रहता है)। वह सतत सर्वत्र विचरणशील रहता है। उसका शरीर मात्र अवशिष्ट रहता है (अर्थात् वह सदैव ब्रह्मरूप होकर शरीर में रहता है और शरीर द्वारा व्यवहार करता है)। जलस्थल (सरोवर-कूप आदि) उसका कमण्डलु होता है। वह सदा अनुन्मत्त रहता है, किन्तु बाहर से बालक, उन्मत्त और पिशाच आदि के समान एकाकी विचरण करता हुआ किसी से सम्भाषण नहीं करता और अपने वास्तविक रूप के ध्यान द्वारा निरालम्ब का अवलम्बन लेकर अपनी आत्मनिष्ठा की अनुकूलता से (अर्थात् आत्मनिष्ठ होकर) सब को भुला देता है। इस प्रकार से जो तुरीयातीत अवधूत के वेश वाला सतत अद्वैत निष्ठा परायण होकर 'प्रणव' भाव में निमग्न होकर शरीर का परित्याग करता है, वह कृतकृत्य हो जाता है, यही इस उपनिषद् का प्रतिपादन है॥

॥ हरिः ॐ ॥



शान्तिपाठ

॥ हरिः ॐ ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

वह परब्रह्म पूर्ण है और वह जगत् ब्रह्म भी पूर्ण है, पूर्णता से ही पूर्ण उत्पन्न होता है। यह कार्यात्मक पूर्ण कारणात्मक पूर्ण से ही उत्पन्न होता है। उस पूर्ण की पूर्णता को लेकर यह पूर्ण ही शेष रहता है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हमारे, अधिभौतिक, अधिदैविक तथा तथा आध्यात्मिक तापों (दुखों) की शांति हो।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

॥ इति तुरीयातीतोपनिषत्समाप्ता ॥

॥ तुरीयातीत उपनिषद् समाप्त ॥



संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥